अध्याय-13
विराम चिह्न

विराम का शाब्दिक अर्थ है–ठहराव अथवा रुकना।

किसी भी भाषा को बोलते, पढ़ते या लिखते समय या किसी कथन को समझाने के लिए अथवा भावों को स्पष्ट करने के लिए वाक्यों के बीच में या अन्त में थोड़ा रुकना होता है और इसी रुकावट का संकेत देने वाले लिखित चिह्न विराम चिह्न कहलाते हैं।

विराम चिह्न के प्रयोग से भावों को आसानी से समझा जा सकता है और भाषा में स्पष्टता आती है। यदि उचित स्थान पर इनका प्रयोग न किया जाय तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

जैसे– रोको, मत जाने दो।

रोको मत, जाने दो।

हिन्दी में कई तरह के विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है–

प्रमुख विराम चिह्न

क्र.सं.	विराम चिह्नों का नाम		चिह्न
1.	पूर्ण विराम	—	।
2.	अर्ध विराम	—	;
3.	अल्प विराम	—	,
4.	प्रश्नसूचक	—	?
5.	विस्मयसूचक	—	!
6.	योजक चिह्न	—	-
7.	निर्देशक चिह्न	—	–
8.	उद्धरण चिह्न	—	‘‘ ’’
9.	विवरण चिह्न	—	:-
10.	कोष्ठक चिह्न	—	( )
11.	त्रुटिपूरक चिह्न या हंसपद	—	λ
12.	संक्षेप सूचक का लाघव चिह्न	—	.

पूर्ण विराम–(।) पूर्ण विराम का प्रयोग वाक्य पूरा होने पर किया जाता है। जहाँ प्रश्न पूछा जाता हो उसे छोड़कर हर प्रकार के वाक्यों के अन्त में इसका प्रयोग होता है।

जैसे–(1) सुबह का समय था।

(2) भारत मेरा देश है।

(3) वाह! कितना सुन्दर चित्र है।

(2) अर्ध विराम (;)–जहाँ पूर्ण विराम जितनी देर न रुककर उससे कुछ कम समय रुकना हो वहाँ अर्ध विराम का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग विपरीत अर्थ प्रकट करने के लिए भी किया जाता है।

जैसे–भगतसिंह नहीं रहे; वे अमर हो गए।

नदी में बाढ़ आ गई; सभी अपना घर-बार छोड़कर जाने लगे।

(3) अल्पविराम (,)–अल्प विराम का प्रयोग अर्द्धविराम से भी कम समय रुकने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग समान पदों को अलग करने, उपवाक्य को अलग करने, उद्धरण से पूर्व, उपाधियों से पूर्व, संबोधन और अभिवादन के बाद आदि स्थानों पर होता है।

(4) प्रश्न सूचक चिह्न (?)–प्रश्न सूचक चिह्न का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यों या शब्दों के अन्त में किया जाता है। कभी-कभी सन्देह, अनिश्चय व व्यंग्यात्मक भाव की स्थिति में इसे कोष्ठक के बीच में लिखकर भी प्रयोग किया जाता है।

जैसे– क्या तुमने अपना गृहकार्य पूरा कर लिया?

तुम कब आओगे?

(5) विस्मय सूचक चिह्न (!)–खुशी, हर्ष, घृणा, दुख, करुणा, दया, शोक, विस्मय आदि भावों को प्रकट करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। सम्बोधन के बाद भी इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे– वाह! कितना सुन्दर पक्षी है। (खुशी)

अरे! तुम आ गए। (आश्चर्य)

ओह! तुम्हारे साथ तो बहुत बुरा हुआ। (दुख)

(6) योजक चिह्न (-)–इस प्रकार के चिह्न का प्रयोग युग्म शब्दों के मध्य या दो शब्दों में संबंध स्पष्ट करने के लिए तथा शब्दों को दोहराने की स्थिति में किया जाता है। जैसे पीला-सा, खेलते-खेलते, सुख-दुख।

जैसे– सभी के जीवन में सुख-दुख तो आते ही रहते हैं।

सफलता पाने के लिए दिन-रात एक करना पड़ता है।

(7) निर्देशक चिह्न (–)–किसी भी निर्देश या सूचना देने वाले वाक्य के बाद या किसी कथन को उद्‌धृत करने, उदाहरण देने, किसी का नाम (कवि, लेखक आदि का) लिखने के लिए किया जाता है।

जैसे– हमारे देश में अनेक देशभक्त हुए–भगतसिंह, सुभाषचन्द बोस, गाँधीजी आदि।

माँ ने कहा–बड़ों का आदर करना चाहिए।

(8) उद्धरण चिह्न (“ ”)–किसी के कहे कथन या वाक्य को या किसी रचना के अंश को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना हो तो कथन के आदि और अंत में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उद्धरण

चिह्न दो प्रकार के होते हैं–इकहरे (‘ ’) तथा दोहरे (“ ”) इकहरे चिह्न का प्रयोग विशेष व्यक्ति, ग्रन्थ, उपनाम आदि को प्रकट करने के लिए किया जाता है।

जबकि किसी की कही बात को ज्यों की त्यों लिखा जाए तो दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग करते हैं।

जैसे– ‘गोदान’ प्रेमचन्द का प्रसिद्ध उपन्यास है।

सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था, “दिल्ली चलो।”

(9) विवरण चिह्न (:–)–इसका प्रयोग विवरण या उदाहरण देते समय किया जाता है।

जैसे– गाँधीजी ने तीन बातों पर बल दिया–सत्य, अहिंसा और प्रेम।

(10) कोष्ठक ( ) चिह्न–वाक्य के बीच में आए पदों अथवा शब्दों को पृथक रूप देने के लिए कोष्ठक में ( ) लिखा जाता है।

जैसे– यहाँ चारों वेदों (साम, ऋक्, यजु, अथर्व) की महत्ता बताई है।

(11) त्रुटिपूरक चिह्न या हंसपद (λ)–लिखते समय कोई शब्द छूट जाता है तो इस चिह्न को लगाकर ऊपर छूटा हुआ शब्द लिख दिया जाता है। इस चिह्न को हंसपद भी कहते हैं।

जैसे– श्रेया माता पिता के साथ बाजार गई।

राम, श्याम के साथ पार्क में घूमने गया।

(12) संक्षेप सूचक (.)–किसी शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। उस शब्द का पहला अक्षर लिखकर उसके आगे बिंदु (.) लगा देते हैं। यह शून्य लाघव चिह्न के नाम से जाना जाता है।

जैसे– बी.ए.–डॉ. अनुष्क शर्मा, पं. राम स्वरूप शर्मा

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. विराम–चिह्न किसे कहते हैं? इनका प्रयोग करना क्यों आवश्यक है?

प्र. 2. निम्नलिखित विराम चिह्नों के सामने उचित चिह्न लगाकर एक–एक उदाहरण लिखो–

(क) लाघव चिह्न– (ख) पूर्ण विराम–

(ग) कोष्ठक चिह्न– (घ) अल्प विराम–

(ङ) प्रश्नसूचक चिह्न–

प्र. 3. निम्न के चिह्न लिखो–

(1) पूर्ण विराम (2) हंसपद

(3) संक्षेपसूचक (4) अल्प विराम

(5) अर्ध विराम (6) प्रश्नवाचक

प्र. 4. निम्न वाक्यों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करें–

मेज पर पुस्तक पेन्सिल व बैग रखा है

अरे देखो वह कौन आ रहा है

गोदान प्रेमचन्द का प्रसिद्ध उपन्यास है